© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 08 , Issue : 02 | April - June 2022

# जयनंदन की कहानियाँ: एक सर्जक कमेंटेटर के पुनर्सृजन का आँखों देखा हाल

**अमरजीत कुमार**
शोधार्थी (हिंदी विभाग), मगध विश्वविद्यालय, बोधगया

**शोध निर्देशक**
**डॉ0 ज्ञान प्रकाश रत्नेश**
(हिंदी विभाग), के0 एल0 एस0 कॉलेज, नवादा

## शोध परिचय

हिन्दी कहानी साहित्य में जयनंदन एक जाना-पहचाना नाम है। इनके अब तक बारह कहानी-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं, जिनमें 175 के आसपास कहानियाँ संकलित हैं। ये कहानियाँ कहीं न कहीं देश की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होकर प्रशंसित हो चुकी हैं। इनके कहानी-संग्रह हैं 'सन्नाटा भंग', 'विश्व बाजार का ऊंट', 'एक अकेले गान्ही जी', 'कस्तूरी पहचानो वत्स', 'दाल नहीं गलेगी अब', 'घर फूंक तमाशा', 'सूखते स्रोत', 'गुहार', 'गांव की सिसकियां', 'भितरघात', 'सेराज बैंड बाजा' तथा 'गोड़पोछना'। इसके साथ ही इनमें से चुनी हुई कहानियों के प्रतिनिधि संकलन - मेरी प्रिय कथायें', 'मेरी प्रिय कहानियां', 'संकलित कहानियां', चुनी हुई कहानियां', 'चुनिंदा कहानियाँ' भी प्रकाशित हो चुके हैं। इनकी कहानियाँ भोगे हुए यथार्थ का बोध कराती हुई सामाजिक सरोकार के गंभीर पहलुओं को रेखांकित करती हैं। इन्हें पढ़ते हुए लगता है कि ये कहानियाँ लेखक के आसपास ही घटित हुई हैं, जिन्हें उन्होंने एक सर्जक कमेंटेटर की तरह पुनर्सृजन करके आँखों देखा हाल प्रस्तुत कर दिया है। इनकी कहानियों का विषय गाँव है, जहाँ से लेखक की स्मृतियाँ जुड़ी हैं, फिर कार्य-स्थल हैं, जहां लेखक वर्षों एक कामगार के तौर पर सेवारत रहे। जहाँ-जहाँ विसंगतियों और अन्तर्विरोधों पर उनकी पैनी नजर गयी हैं, वहाँ की समस्यायें और त्रासदियाँ जीवंतता से चित्रण के कैनवास पर उतर आयी हैं। जिस औद्योगिक शहर से

लेखक का वास्ता रहा है, वहाँ के मजदूरों के दुख-दर्द और सिसकियों के करुण स्वर कराह की तरह इनकी कहानियों में समाहित होते दिखाई पड़ते हैं। इसके अलावा भी लेखक की सचेत नजरें घर-परिवार, पास-पड़ोस, ऑफिस-शहर की विडम्बनाओं को कैमरे की तरह अपनी गिरफ्त में ले लेती हैं।

धर्मयुग जैसी पत्रिका में प्रकाशित अपनी कहानी 'बदरी मैया' में एक विधवा वृद्ध औरत के साथ उसके कलयुगी बेटों के निर्मम सलूक का बेधक बयान दर्ज है। बदरी मैया अपने पति की मृत्यु के बाद अपनी बेटी बबनी के साथ बेटों का भी पालन-पोषण करती हुई उन्हें किसी चीज की कमी होने नहीं देती। ये बेटे बड़े होकर अपनी बहन की शादी जैसे-तैसे एक गरीब घर में निपटा देते हैं। तमाम सुखों और नाजों में पली बबनी को कष्टकारक अभावों और मुश्किलों में रहने के लिए मजबूर हो जाना पड़ता है। मैया अपनी बेटी को कुछ मदद पहुंचाना चाहती है तो ऐसा करना बेटों और बहुओं पर नागवार गुजर जाता है। ऐसे में वह लुका-छिपाकर कुछ देना चाहती है तो वे उसका इस तरह पर्दाफाश करके अपमानित कर देते हैं जैसी बहुत बड़ी चोरी पकड़ ली हो। मैया को लगता है कि इस घर में अपने बेटों-बहुओं के साथ अब आगे गुजर करना मुश्किल है। वह अपने भाई के साथ नैहर में जाकर रहने का फैसला कर लेती है। जाते-जाते अपना अंचरा फैलाकर बेटों से कहती है कि लो बेटा, मेरी तलाशी ले लो। इस घर में हम भैया का दिया कपड़ा पहनकर आये थे और आज उन्हीं का दिया कपड़ा पहनकर वापस जा रहे हैं। उन्हें अशीषते हुए कहती है कि भगवान तुम लोगन को सुखी रखे। बदरी मैया के बूढे भाई अपनी बहन की हालत पर फफक पड़ते हैं। उनके ध्यान में आता हैं कि बहनोई मरे थे तब भी इतनी तकलीफ नहीं हुई थी उन्हें। यह कहानी बदले हुए समाज की नब्ज पर उंगली रखकर पाठकों को भावुक बनाकर बेचैन कर देती है। ''टेढ़ी उंगली और घी'' तथा ''माफिया सरदार'' कहानी शहरों में वर्चस्व की लड़ाई में हो रही

हत्याओं का जीवंतता से खुलासा करती है। टेढ़ी उंगली और घी में बिल्टू राम बोबोंगा और माफिया सरदार में अफजल मियाँ का चरित्र अपराधिक पृष्ठभूमि में निर्मित हुआ है जो सिर्फ हत्या करके ही समाधान का रास्ता तलाशना चाहते हैं।'टेढ़ी उंगली और घी' कहानी की नायिका रेशमी बिल्टू बोबोंगा से घृणा करती है लेकिन परिस्थिति और समय के बदलाव ने उसके मन में सहानुभूति पैदा कर दी और धीरे-धीरे वह उसके नजदीक आने लग गयी। लेकिन बिल्टू को पता है कि वह सहपाठी रह चुके प्रेरित को चाहती है। वह उसी से प्रेम की ओर उन्मुख रहने की सलाह देता है। यह कहानी प्रेम के साथ राजनीति में भी आने के प्रसंग को बड़े ही रोचक ढंग से प्रस्तुत करती है। 'माफिया सरदार' एक ईमानदार ऑफिसर वारिस और शहर का दबंग व आतंक का पर्याय अफजल मियाँ के द्वंद्व को उद्घाटित करती है। अंततः ईमानदार ऑफिसर की हार होती है और अफजल मियाँ राजनीतिक प्रभाव में आकर नेता बन जाता है।

अप्रकट कहानी के माध्यम से कथाकार जयनंदन ने पति-पत्नी के बीच बच्चों की मजबूत कड़ी के रूप में समन्वयकारी भूमिका को बहुत बारीकी से चित्रित किया है। कहानी में बेटी अपने पिता को संबोधित करते हुए उनके संबंधों में आने वाले उतार-चड़ाव को उद्घाटित करती है। आज के समाज में ऐसी स्थितियाँ प्रायः देखने को मिल जाती हैं कि पति-पत्नी के बीच थोड़ी सी भी अनबन हुई नहीं कि दोनों दो ध्रुवों में रास्ता अपना लेते हैं। लेकिन अप्रकट में ऐसा नहीं होता है। इसमें दोनों का रास्ता अलग-अलग है, फिर भी दोनों एक-दूसरे से प्रेम करते हैं। ऐसा प्रेम जो अप्रकट है, लेकिन प्रगाढ़ है। बेटी कहती है कि मैं यही मान बैठी थी कि पति-पत्नी के संबंध शायद इसी तरह होते हैं - अपनी-अपनी सीमा संभालते हुए दो दुश्मन की तरह। यह अलग बात है कि मम्मी अगर पाकिस्तान रही....बेमतलब, बेतुकी

ISSN : 2454 – 308X | Volume : 08 , Issue : 02 | April - June 2022

और विवेकहीन फायरिंग करने वाली तो आप हिन्दुस्तान रहे....जरा संयमित, धीर-गंभीर और चतुर....जवाबी गोली-बारी तो आपकी तरफ से भी हुई ही न। बेटी के द्वारा पिता को यह कहने पर कि ‘‘आप किसी दूसरी महिला को अपने जीवन में प्रवेश दे दें’’ के जवाब में पिता एक दार्शनिक मुद्रा में कहते हैं - जैसे धूप और पानी के संसर्ग में रहने वाली कोई भी खाली जमीन, खाली नहीं रहती अगर वह बंजर नहीं है। बिना उगाये उग आता है उसमें कोई न कोई पौधा या घास। वैसा ही व्यक्ति के साथ भी होता है....उसे भी किसी के सान्निध्य व आत्मीयता की तलब रहती है, जो कभी न कभी पूरी हो ही जाती है। यह कहानी बदलते दाम्पत्य परिवेश को एक नये कोण से परिभाषित करने में काफी सफल रही है।

सन्दर्भ सूचि :


- http://pahleebar.blogspot.com/2018/05/blog-post.html
- http://pahleebar.blogspot.com/2013/11/blog-post_9.html
- https://www.hindisamay.com/content/1764/1/.cspx
- http://gadyakosh.org/
- https://www.livehindustan.com/news/jamshedpur/article1-Jaynandn-true-stories-Nirmala-675418.html